Roll No.	**:**	
Unique Paper Code	**:**	**121302310**
Title of the Paper	**:**	**निरुक्त एवं भारद्वाज श्रौतसूत्र**
		Nirukta & Bharadwaj Srautasutra
Name of the Course	**:**	**M.A. Sanskrit, LOCF, January-2024**
Group:	**:**	**A**
Semester	**:**	**III**
Duration	**:**	**3 Hours**
Maximum Marks	**:**	**70**

इस प्रश्नप्रत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमाँक लिखिए।

Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper

टिप्पणी: अन्यथा आवश्यक न होने पर इस प्रश्न-पत्र का उत्तर **संस्कृत** या **हिन्दी** या **अंग्रेजी** किसी एक भाषा में दीजिए, परन्तु सभी प्रश्नों का माध्यम एक ही होना चाहिए।

Note: Unless otherwise required in a question, answers should be written in **Sanskrit** or in **Hindi** or in **English** but the same medium should be used throughout the paper.

1. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए, जिनमें से किसी एक की व्याख्या संस्कृत में हो। **7x4 = 28**

   Explain the following, out of which one should be in Sanskrit.

क. अयमेवाग्निर्द्रविणोदा इति शाकपूणिः। आग्नेयेष्वेव हि सूक्तेषु द्राविणोदसाः प्रवादा भवन्ति। देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम्। यथो एतत् स बलधनयोर्दातृतम इति सर्वासु देवतास्वैश्वर्यं वर्तते। यथो एतत् – "ओजसो जातमुत मन्य एनम्" इति चाहेति, अयमप्यग्निरोजसा बलेन मथ्यमानो जायते तस्मादेनमाह – सहसस्पुत्रं सहसः सूनुं सहसो यहुम्।

अथवा/OR

नरांशसो यज्ञ इति कात्थक्यः। नरा अस्मिन्नासीनाः शंसन्ति। अग्निरिति शाकपूणिः। नरैः प्रशस्यो भवति। तस्यैषा भवति –

नराशंसस्य महिमानमेषामुप स्तोषाम यजतस्य यज्ञैः।
ये सुक्रतवः शुचयो धियन्धाः स्वदन्ति देवा उभयानि हव्या॥

ख. रुद्रो रौतीति सतो, रोरूयमाणो द्रवतीति वा। रोदयतेर्वा। यदरुदत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वमिति काठकम्। यदरोदीत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वमिति हारिद्रविकम्। तस्यैषा भवति -

इमा रुद्राय स्थिरधन्वने गिरः क्षिप्रेषवे देवाय स्वधाव्ने।
अषाह्ळाय सहमानाय वेधसे तिग्मायुधाय भरता शृणोतु नः॥

अथवा/OR

पर्जन्यस्तृपेराद्यन्तविपरीतस्य। तर्पयिताजन्यः। परो जेता वा, जनयिता वा, प्रार्जयिता वा रसानाम्। तस्यैषा भवति –

वि वृक्षान्हन्त्युत हन्ति रक्षसो विश्वं बिभाय भुवनं महावधात्।
उतानागा ईषते वृष्ण्यावतो यत्पर्जन्यः स्तनयन्हन्ति दुष्कृतः॥

ग. सिनीवाली सिनमन्नं भवति, सिनाति भूतानि। वालं पर्व, वृणोतेस्तस्मिन्नन्नवती। वालिनी वा। वालेनेवास्यामणुत्वाच्चन्द्रमसः सेवितव्यो भवतीति वा। तस्यैषा भवति–

सिनीवालि पृथुष्टके या देवानामसि स्वसा।
जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि दिदिड्ढि नः॥

अथवा/OR

तामश्विनौ प्रथमागामिनौ भवतः। अश्विनौ यद्व्यश्नुवाते सर्वं रसेनान्यो, ज्योतिषाऽन्यः। अश्वैरश्विनावित्यौर्णवाभः। तत्कावश्विनौ? द्यावापृथिव्यावित्येके। अहोरात्रावित्येके। राजानौ पुण्यकृतावित्यैतिहासिकाः। तयोः काल ऊर्ध्वमर्धरात्रात्प्रकाशीभावस्यानुविष्टम्भम्। अनुत्तमो भागो हि मध्यमः। ज्योतिर्भाग आदित्यः। तयोरेषा भवति –

वसातिषु स्म चरथोऽसितौ पेत्वाविव।
कदेदमश्विना युवमभिदेवाँ अगच्छतम्॥

घ. आग्नेयमष्टकपालं पुराणानां निरुप्यैन्द्राग्नमेकादशकपालं नावानां निर्वपति। द्वादशकपालमाग्नेन्द्रं वा। वैश्वदेवं चरुम्। पयसि शृतो भवति। सौम्यँ श्यामाकं चरुं द्यावापृथिव्यमेककपालम्। अपि वा नवान्येव निर्वपेत्। नाग्नेयम्।

अथवा/OR

विकृतिश्च दर्शपूर्णमासौ च। दर्शपूर्णमासयोर्विकृतेश्च संनिपाते दर्शपूर्णमासौ बलायाँसौ। यानि त्विष्टिपशुबन्धानां प्रत्यक्षश्रुताम्नातानि तत्र बलीयाँसि। त्रयोविँशतिदारुमिध्मं करोति। तत्रैषोऽत्यन्तप्रदेशः।

2. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए – **5x4=20**

   Write the short notes on the following:

   क. उषासानक्ता **अथवा/OR** वनस्पतिः
   ख. वरुणः **अथवा/OR** वास्तोष्पतिः
   ग. चन्द्रमाः **अथवा/OR** विष्णुः
   घ. पुरोडाशः **अथवा/OR** विकृतियागः

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** के निर्वचन यास्क के अनुसार संस्कृत में दीजिए – **2x3 = 6**

   Give the etymology of any **three** of the following words in **Sanskrit** according to **Yaska**:
   आप्रियः, द्वारः, वायुः, क्षेत्रस्य पतिः, अज एकपात्, पूषा

4. किन्हीं **दो** पर आलोचनात्मक निबन्ध लिखिए - **8x2 = 16**

   Write a critical essay on any **two** of the following:

   क. तनूनपात्
   ख. इन्द्रः
   ग. सविता